अध्याय प्रथम

“छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय”
“छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय”

१. छत्तीसगढ़ का भौगोलिक एवं राजनीतिक परिचय।
२. छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों के विभिन्न वर्ग।
३. छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों का आगमन एवं उनकी गतिविधियाँ।
४. कांग्रेस का जन्म एवं राष्ट्रीय चेतना का छत्तीसगढ़ में उदय।
बिलासपुर जेल में माखन लाल चतुर्वेदी द्वारा रचित कविता –

“मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ भूमि सीस चढ़ाने,
जिस पथ जाये बीर अनेक।’’
च्छतीसगढ़ का भौगोलिक एवं राजनीतिक परिचय :-

सामान्य परिचय :-

च्छतीसगढ़ का स्मारण करते ही मानस पतल पर अनेक विचार उभरते हैं और अपना आभाष देखकर बिल्कुल हो जाते हैं, नंद, मौर्य, शापु, वाकारक पाण्डु, शारभपुरीय श्रीम, कलजूरी नाम, गोड, मराठा आदि कितने ही कंपों का इतिहास समेट अतीत काल से हिंदुस्तान के हूदय स्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्वी भू भाग पर स्थित च्छतीसगढ़ ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों को अपने शिक्षनार्थ की पाठ्यों में प्रस्तुत हो किलकारियों भारत हुआ, किड़ा करता हुआ, इत्यादि, हस्तो, अरपा आदि नदियों द्वारा सिंचित अपनी "आनंदयामिनी श्रवण" के कारण "धान का कटोरा" नाम से मिलत वैभव सम्पन्न सुख शान्ति वीरता से युक्त छ्छतीसगढ़ीयों के क्षेत्र इस छ्छतीसगढ़ ने संदियों के भीतर इतिहास की पंपरा को हूदय रूप करते हुये समयानुसार देश के परिवर्तन कारी घटनाक्रमों के परिणामों के आत्मसात करते हुये अपने विकास की पंपरा को सत्ता उंचाई की ओर बढ़ाया है। यानों विकल वैभव की विजय की महत्वपूर्ण पराक्रम विश्व में फहराने के लिये वह बादल सा ऊंचाईयों की ओर उठ रहा है।

वर्तमान का यह छ्छतीसगढ़ राज्य समय में दंडकारण्य का एक भाग था तथा किन्तु उन्हीं दंडकारण्य इसके अन्तर्गत आता है। अतीत काल में यह छ्छतीसगढ़ "दक्षिण कोशिल, महाकोशिल, महाकान्तार, दंडकारण्य आदि धूमिलिख्यात नामों से जाना जाता था और हर युग में इसका अपना विशेष महत्व रहा है।

1. संदर्भ छ्छतीसगढ़ राज्य संख्या - 20
2. आविद छ्छतीसगढ़ राज्य संख्या 20
नम्नदा के उद्गम स्थल अमरकंटक को प्रस्थान बिन्दु मानकर हम छत्तीसगढ़ की प्रदेश सीमा को इस प्रकार खींचते हैं। अमरकंटक से बोड़ी दूर नैस्वर्ण्य दिशा की ओर चलकर शेखर पवनों को लगातार छूती हुई यह सीमा 20 अर्धशंक्रांि 81 देशान्तर के मिलन बिन्दु के पास से होती हुई साल्टकटियों व लाठी की घाटियों तक आती है, इसके पश्चात् यह बोड़ी पूर्व दिशा की ओर मुड़कर फिर नैस्वर्ण्य दिशा की ओर चलकर दक्षिण दिशा में पूर्व जाती है। 21 अर्धशंक्रांि को पार कर यह बोड़ी पूर्व, फिर दक्षिण ओर फिर पूर्वी दिशा की ओर मुड़ जाती है। नांदगांव की सीमा समाप्त कर और शिवनाथ नदी को पार कर यह एकाएक फिर दक्षिण की ओर पूर्व जाती है।

दूरी जिले की तहसील संजारी को निषिद्ध करते हुये यह खरकरा नदी के पास से होते हुये आगम्य दिशा की ओर बढ़ती है। 61 देशान्तर के पास यह सीमा नैस्वर्ण्य दिशा की ओर मुड़कर एक बहिष्करण बनाती है।

अपने पथ को बोड़ा टेढ़ा मेड़ा रूप देकर यह काफी के बाद अपने मार्ग को पूनः टेढ़ामेड़ा कर देती है, फिर आगम्य की ओर मुड़ जाती है। पार्लावट को अंतिमत करते हुये इसकी सीमा कोटाई नदी के प्रवाह के साथ - साथ कोटाई व इंद्रावती की नदियों के संगम पर पहुंच जाती है। इस स्थान से इसकी दिशा इंद्रावती के प्रवाह के किरदार दूर - दूर तक चलती है।

19 अर्धशंक्रांि 81 देशान्तर के मिलन बिन्दु के पास से होती हुई यह सीमा इंद्रावती को उत्तर में छोड़ती हुई दन्तेवाड़ा तक पहुंच जाती है।

1. एम.जी. दिशित :— मध्यप्रदेश की रूप रेखा पेज संख्या — 102
दलवाड़ा में डंकनी व शाकनी नदियों का संगम है। तदनतर उसी आग्नेय दिशा का पथ अनुसरित करती हुई यह सीमा दरबार घाट तक पहुँच जाती है। दक्षिण घाट को अपने क्षेत्र में लेती हुई इसकी सीमा बस्तर राज्य में पूर्वी सीमा पर चलती हुई, जगदलपुर, जैतिगिरि, व कमरिया को अंतर्गत करती हुई उत्तर की ओर बढ़ती है। २० अशांत को पार करते ही यह सीमा महानदी के उद्गम-सर सिंहावा को अपने भीतर ले रायपुर सीमा को लगातार अनुसरित करती हुई चलती है।

तदनतर देशभोग को दक्षिण, पूर्व व उत्तर से घेरते हुये यह रायपुर जिले के पूर्वी भू भाग पर निरंतर चलती हुई उत्तर की ओर बढ़ जाती है। रायपुर जिले की सीमा को छोड़कर अब यह सुअरमाल को अंतर्गत करते हुये जोंग नदी का मार्ग अपनाती है।

२१ अशांत पार करते हुये यह फिर रायपुर जिले में स्थित पूलतार राज्य को अंतर्गत करते हुये पूर्वी दिशा की ओर बढ़ता है फिर उसकी दिशा इशान्य की ओर बढ़ जाती है और सर्देउली को अपने क्षेत्र में लेती हुई अब यह सारंगढ़ राज्य की राजनीतिक पूर्वी सीमा पर चलती है।

कुछ दूर चलने पर यह महानदी के बिलकुल अनुकूल हो अपना मार्ग अपनाती है और पदमपुर तक आ जाती है इसके बाद यह रायगढ़ राज्य की पूर्वी सीमा का अनुसरण करती है। रायगढ़ राज्य को अंतर्गत करते हुए व २२ अशांत को पार करने के बाद ही उनकी सीमा फिर एकाएक इशान्य की ओर बढ़ते हुये जमशेद राज्य को अपनी सीमा में लेती है।

आर.सी. मजूमदार : द वैदिक एज पेज २६.
23 अर्थांश पार करने के बाद यह सर्गुण राज्य की पूर्वी सीमा पर 84 देशान्तर के समानान्तर चलती हुई फिर बायद्य की तरफ मुड़ जाती है तथा 24 अर्थांश पार करने के बाद ही उसकी सीमा फिर एकाएक नैस्त्रिकत की ओर चल पड़ती है 24 अर्थांश के आसपास होते हुये पशिचम की ओर बढ़ती जाती है।

सर्गुण राज्य की उत्तरी राजनीतिक सीमा को अपने अंतर्गत कर यह सीमा कोरिया की उत्तरी सीमा पार कर लेती है 24 अर्थांश के समानान्तर होती हुई यह सीमा पशिचम से दक्षिण व फिर नैस्त्रिक चलकर चांगभखार को बायें से ले 82 देशान्तर के पास आकर आपने की ओर बढ़कर फिर दक्षिण की ओर आकर कोरिया की राजनीतिक सीमा पार करती है।

रीवां राज्य को दायें छोड़ती हुई यह सीमा अपना बार्थ नैस्त्रिक दिशा की ओर बनाती है और 23 अर्थांश और 82 देशान्तर के मिलन बिन्दु के पास पहुँचकर अमरकंठ पर आकर अपने प्रस्थान बिन्दु को इस प्रकार छूटी है कि छत्तीसगढ़ का मानचित्र बड़ी सरलता से बन जाता है।

जिस प्रकार भारत का हृदय स्थल मध्यप्रदेश को माना गया है उसी प्रकार मध्यप्रदेश का हृदय स्थल छत्तीसगढ़ कहलाता है जहां पर प्राकृतिक संपदा, खनिज, कोयला आदि प्रजुल मानचित्र में प्राप्त हो रहे हैं।

राजनीतिक परिचय :-

छत्तीसगढ़ की राजनीतिक भूमिका को पुरुष और नये मध्यप्रदेश की पूर्वभूमि में ही संदर्भ सहित जाना जा सकता है।

एम.जी. दिशित :- मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूप रेखा।
भाषावाद प्रांतों की रचना के फलस्वरूप 1 नवम्बर 1956 की कार्त्तिक रात्रि को वर्तमान प्रदेश ने जन्म लिया। इसके पूर्व हिंदी भाषी प्रदेशों के रूप में पुराना मध्यप्रदेश जिसे सी.पी.एण्ड बरार कहा जाता है या के अलावा विन्यासप्रदेश, मध्यप्रदेश और भोपाल राज्य थे, जिनके विलीनीकरण से नये मध्यप्रदेश का स्वरूप बना।

नये और पुराने इन राज्यों में देशी रियासतें का बाहुल्य था। मध्यभारत में म्यालियर की सिंधिया शासित और इंदौर की होलकर शासित बड़ी रियासतें थी। विन्यास क्षेत्र में रीवा राज्य से शासित कई छोटी बड़ी जमींदारियाँ थीं। भोपाल की एक बड़ी रियासत थी 1948 के पूर्व इनके अपने अलग - अलग शासित राज्य थे और 1948 में रियासतों के विलीनीकरण के समय इन्हें विन्यासप्रदेश, मध्यभारत, और भोपाल राज्य का स्वरूप मिला। 1956 में भाषावाद प्रांतों की रचना के समय मध्यप्रदेश के साथ मिलकर ये नये मध्यप्रदेश के अंग बन गये।

पुराने मध्यप्रदेश का बरार क्षेत्र महाराष्ट्र में विलीन कर दिया गया क्योकि यह मराठी भाषी क्षेत्र था, पुराने प्रदेश का जो हिंसा सेन्ट्रल प्राविन्सिए [सी.पी.] कहलाता था उसमें महाकौशल और छत्तीसगढ़ प्रमुख क्षेत्र थे छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोषाल भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में रायपुर, रायगढ़, दूै, बस्तर, बिलासपुर, रायगढ़, सरगुजा छः जिले थे। 1972 में दूै जिले को विभाजित कर राजनादिगंज जिला बनाया और सन 1981 में बस्तर जिले को नये राज्य रांची का दर्जा प्रदान किया गया। महाकौशल क्षेत्र में मण्डला, बालाघाट, छिडाओ, बैतूल, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, खंडवा, निमाड़, सागर, दमोह जिले थे।

1. संदर्भ छत्तीसगढ़
2. संदर्भ छत्तीसगढ़

संदर्भ:
1. संदर्भ छत्तीसगढ़
2. संदर्भ छत्तीसगढ़.
पुराने मध्यप्रदेश क्षेत्र में महाकौशल क्षेत्र आमतौर पर गरीबियों के रियासती क्षेत्र था। तथा हजारों गरीब मौल की बस्तर सबसे बड़ी रियासत थी जबकि 138 गरीब मौल की शस्त्र सबसे छोटी रियासत गाना जाता है कि छोटी बड़ी 36 रियासतों के कारण भी यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ कहलाता है।

भाषावार प्रान्तों के निर्माण के समय हिंदी भाषी क्षेत्रों की विलय की बात तो आमतौर पर सिद्धान्त स्वरूप थी परंतु मध्यप्रदेश के साथ विकसित और अविकसित इलाकों के बीच संतुलित विलय के साथ ही आदिवासी और गैर आदिवासी क्षेत्रों के एकीकरण का प्रयत्न भी था। नये प्रदेश में विलीन किये जाने वाले क्षेत्रों में धावांतर, इंदौर जैसी बड़ी रियासतों और विकसित क्षेत्र थे जो छत्तीसगढ़ के बस्तर और रंगुला जैसी पिछड़ी आदिवासी बहुल रियासतों सामने थी। नये प्रदेश निर्माणकारों का विचार था कि अविकसित और आदिवासी बहुत क्षेत्र को जब तक विकसित और गैर आदिवासी इलाके से जोड़ा नहीं जायेगा। उनका आर्थिक और सामाजिक विकास नहीं हो पायेगा। पिछड़े क्षेत्रों को विकास की मूल्य घारा से भिड़ने का लक्ष्य भी था। और कुल मिलाकर इन्हीं कारणों से मध्यप्रदेश का यह बड़ा स्वरूप बना और विभिन्न अंतररिवरों और दबावों के बीच 37 वर्ष का जीवन यह प्रदेश पर चुका है।

नये प्रदेश के पूर्व विलीन हुये प्रदेशों की आर्थिक और विकास की स्थितियों के साथ ही राजनैतिक चेतना में बहुत अंतर था। पुराने मध्यप्रदेश के महाकौशल और छत्तीसगढ के मंत्रित्व संग्राम का सिलसिला कहा जा सकता है कि इस शादी के प्रथम दशक से ही सक्रिय था। जबकि विध्याप्रदेश, मध्यभारत और भोपाल में लगभग तीन दशक बाद सन् 30 के बाद इसकी आशेक शुरुआत हुई।

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
2. 
3. 
छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम की सुरक्षात नई मान्यताओं के अनुसार 1857 में हो चुकी थी जब बीए नारायण सिंह का बिघोष हुआ माना जाता है। इस बात के ऐतिहासिक मामले है कि पुराने मध्यप्रदेश की राजनीतिक चेतना पर जोकमानि तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले के स्वतंत्र आंदोलन का असर था और सन् 1910 से 1915 के बीच छत्तीसगढ़ और महाकौशल गांधी जी के प्रभामण्डल में शामिल हो चुके थे।

छत्तीसगढ़ की विशेषता यह भी थी कि इस क्षेत्र के देशी रियासतों और जमींदारियों मध्यभरत और विन्य स्थान भोपाल क्षेत्र की रियासतों की तरह स्वतंत्रता आंदोलन से अलगी थी। छत्तीसगढ़ की राजनीति में माधवराव रघु, वामन लाखे, सुन्दर लाल शर्मा जैसे अनेक नेता सक्रिय थे।

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आम तौर पर सब एक थे परन्तु वैज्ञानिक रूप से उन दिनों भी दो धाराएं सक्रिय रही। एक का नेतृत्व स्वामी पण्डित रविशंकर श्रृंखला के हाथ था तो दूसरे के साथ स्वामी सुंदर लाल शर्मा जैसे नेता था। परन्तु राजनीति में नेतृत्व पं. रविशंकर श्रृंखला के हाथों था और उनका वर्षांकन भी।

छत्तीसगढ़ की राजनीतिक शक्ति, उसका स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से आग्रह होना लोग है ही इसके अलावा इस क्षेत्र की नैसर्गिक सम्पदा ने उसके आधुनिक विकास की समस्त संभावनाओं के कारण भी उसे प्रदेश में अग्रणी और शक्तिशाली होना रखा है। लीला खनिज के अपूर्व मंदिर के कारण देश का पहला इस्पात उद्योग भिलाई में स्थापित हुआ और वहीं से शुरू हुई इस देश की आधुनिक विकास यात्रा।

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
2. वहीं
3. वहीं.
आज लगभग सभी आधुनिक उद्योग इस क्षेत्र में चल रहे हैं और आने वाले अगले 100 वर्षों के लिये भी प्रदेश के विकास की समस्त संभावनाओं के क्षेत्र छत्तीसगढ़ क्षेत्र में ही है। छत्तीसगढ़ में धान प्रमुख फसल है जबकि अब तक वैकल्पिक दूसरी फसल तैयार नहीं की जा सकी है।

90 विधायकों और 11 सांसदों को निर्वाचित करने वाले छत्तीसगढ़ क्षेत्र का प्रदेश की राजनीति में वर्षस्वरूप बना हुआ है परन्तु संभावनाओं, क्षमता तथा अव्यवस्थाओं के अनुसार विकास नहीं होने से असंतोष के कई मुद्दे हैं जो राजनीति के मुद्दे बने हुए हैं।

छत्तीसगढ़ की राजनीतिक विचारधारा में प्रारंभ से कांग्रेस का प्रभाव और वर्षस्वरूप रहा है और पिछले 31 वर्ष व उसके पूर्व से कांग्रेस ही प्रमुख दल है। राष्ट्रीय स्तर पर जो विचार धारा जिस दौर में प्रभावी रहा उसका ही असर छत्तीसगढ़ में ही रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कांग्रेस और स्वातन्त्र भारत का प्रभाव था। आजादी के बाद पहले दशक में समाजवादी प्रमुख विपक्षी था। 1.

छत्तीसगढ़ की राजनीति उसके महत्व और अकांक्षाओं को दर्शाने के लिये कुछ आकर्षण तर्क संगत होगी :-

प्रदेश के 40 लोक सभा क्षेत्र में से 11 लोकसभा क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है प्रदेश के सुरक्षित 15 क्षेत्रों में 6 छत्तीसगढ़ में है प्रदेश में हरिजन सुरक्षित क्षेत्र 6 है जिसमें से 2 छत्तीसगढ़ में है प्रदेश में आदिवासी सुरक्षित क्षेत्रों की संख्या 9 है जिसमें से 4 क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है। 2.

प्रदेश में 320 स्थानों में से 90 विधानसभा क्षेत्र छत्तीसगढ़ में है। 119 आरक्षित क्षेत्रों में से 44 छत्तीसगढ़ में है जिसमें 4 आदिवासी सुरक्षित क्षेत्रों की संख्या 34 है जबकि हरिजन सुरक्षित क्षेत्र 10 है जबकि प्रदेश की सुरक्षित क्षेत्र हरिजन 44 और आदिवासी 74 है। 3.

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
2. वही.
3 वही.
प्रदेश की कुल जनसंख्या 6,61,18,11,60 है जिसमें छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 1,76,14,928 है। प्रदेश में हरिजनों की संख्या 96,26,679 है जबकि छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 21,48,358 है। प्रदेश में आदिवासियों की संख्या 1,53,99,034 है जिसमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 57,17,124 है।

छत्तीसगढ़ में ग्रामीण आबादी 14550235 है जबकि शहरी आबादी 3064793 है। इन आकड़ों से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ की अधिकांश आबादी ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में है और इनके विकास की न केवल जरूरत है चर्चा इन्हें ग्रामीण क्षेत्र में खनिज और वनों के नैसर्गिक साथन से उपलब्ध है। इसीलिए इन्हीं क्षेत्रों में विकास की संभावनायें है।

आकड़े आबादी के हों या जन प्रतिनिधियों के, किसी भी क्षेत्र की राजनैतिक शक्ति है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र का इसलिए प्रदेश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान है और वहीं सामाजिक विभाग भी निर्धारित करता है।"1.

1. संदर्भ छत्तीसगढ़.
छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों के विभिन्न वर्ग :-

यू तो छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों ही नहीं अपितु सभी धर्म और वर्ग के लोग रहे हैं, परन्तु हमारे शास्त्र प्रबंध में विभेद वर्ग ब्राह्मणों का उल्लेख अत्यन्त आवश्यक हो गया है जिन्होंने भारत माता की आजादी के लिये अपना तन, मन धन सब न्यायाधिकरण कर दिया है।

छत्तीसगढ़ में सरस्वतीय ब्राह्मणों के अलावा कान्य कुञ्ज, साण्डीत्य, गौतम, सनाय आदि अन्य ब्राह्मण गोत्र के ब्राह्मण तो है ही, इसके अलावा मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, हरियाणी आदि ब्राह्मण भी यहां पर आकर बस गये हैं, यहां पर ब्राह्मणों का कोई अलग गुट नहीं था बल्कि सभी ब्राह्मण वर्ग एक साथ एक जुड़ होकर अपनी तथा अपने देश की आजादी के लिये जी जान से लग गये और देश की सेवा में न्यायाधिकरण हो गये।

छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों की स्थिति आज भी वही है जो आजादी के 50 वर्ष पहले थी अपितु और दिनों दिन गिरती जा रही है, परन्तु फिर भी ब्राह्मण अपने उत्थान के लिये प्रयत्नशील है और अपना तथा समाज का आपस में संबंध बढ़ाने के लिये कुछ ना कुछ योगदान दे रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में जो भी ब्राह्मण वर्ग भस्म हुये है वे कुछ तो जीविकापूर्वक के लिये आये हैं तथा कुछ अंग्रेजों के शासन काल में, कुछ मराठों के समय आये हैं, तथा कुछ मुगल काल में तिर्युट्त्न या जीविकापूर्वक के लिये आकर भस्म हुये हैं। इनमें से प्रमुख ब्राह्मण वर्ग है :- गौड़, आदिगौड़, जिजिडिघिया, शादिन्द्र, भारद्राज, आदुगौड़, सरस्वतीय, कान्य कुञ्ज, भट्ट ब्राह्मण, सनाय ब्राह्मण, जिजिदिघिया, गढ़वाली ब्राह्मण, भारव ब्राह्मण, नामदीय ब्राह्मण, सारस्वत ब्राह्मण, दादीया ब्राह्मण, कुमाऊँ ब्राह्मण, गोस्वामी ब्राह्मण, गौड ब्राह्मण, गुर्जर ब्राह्मण, विजवक्तमो ब्राह्मण, औदर्जव ब्राह्मण, सेकवताल ब्राह्मण, पुकुराण ब्राह्मण, बुधमा भट्ट ब्राह्मण, वैष्णव ब्राह्मण, क्रीमाल्ली ब्राह्मण, पारिक ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण नागदात्र ब्राह्मण, पारासर ब्राह्मण, नागर ब्राह्मण आदि विभिन्न ब्राह्मण हमारे छत्तीसगढ़ में आकर भस्म हुये हैं और अपने समाज के उत्थान की दिशा में कार्य कर रहे हैं, जैसे रोजगार, शादी व्याह आदि।
छत्तीसगढ़ में ब्राह्मणों का आगमन एवं उनकी गतिविधियाँ :-

आगमन :- छत्तीसगढ़ में आज छत्तीसगढ़ ब्राह्मणों का परिवार बहुत ही विस्तृत है। छत्तीसगढ़ के सात जिला मुख्यालयों तथा करीब हजार से अधिक गांव में इनकी जनसंख्या काफी तौर पर ५ करीब तीन लाख में उपस्थित है, मूलतः ये सब सरपुरारिण है तथा छत्तीसगढ़ में इनका आगमन 300 वर्ष से भी पहले का है।

सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध में जब भारत वर्ष में मुगलों ने अधिपत्य जमाया तब मुगलमानों ने विभिन्न वर्गों को नाना प्रकार से दण्ड तथा कर देने के लिये भाष्य कर दिया इनमें से एक वर्ग ब्राह्मण वर्ग भी रहे, जिन्हें मुगलों ने अत्यधिक नश्त कर रखा था। ब्राह्मणों को पकड़कर जबरदस्ती उनका धर्म भ्रष्ट किया जाता था, उनकी पिक्साियों काट ली जाती थी और उनके जनें और अपमान भी किया जाता था। युद्ध में हिन्दुओं को गाय के मर्मांक बाले कार्तवू स चलाने के लिये दिया जाता था जबकि हिन्दू गाय को मां के सामान मानते है और उसकी पूजा करते है, न हूँ हल्द्य को सबसे बड़ा पाप समझते है, उसी गाय को मारकर उसके चर्चा से कार्तवू बनाकर उसको उपयोग करने के लिये हिन्दुओं को भाष्य किया जाता था, इस तरह से ब्राह्मणों का जीना दूसरा हो गया था वे जीते जी मरे हुए के सामान हो गये थे।

तब उन्होंने निरंतर किया कि यह जीवन मौत से बदतर है अगर जीना है तो हमें किसी अन्य क्षेत्र में जीवन यापन करना होगा नहीं तो मर जाये। सोलहवीं सदी में धर्म कौशल पर "माराठा शासक" राज्य कर रहे थे और उन्हें भी अपने राज्य के लिये योग व्यक्तियों की महत्त थी ब्राह्मणों के धर्म कौशल आगमन पर मराठों ने उन्हें जमीन आदि देकर बसाया और उन्हें उनके योग्य पद देकर स्थापित किया।

1. रामगोपाल तिवारी अभिनंदन ग्रंथ :- पेज 43.
2. वहीं.
जब रतनपुर में हेड़खवंशी राजा राज्य किया करते थे 1745 
के आसपास छत्तीसगढ़ में मराठों का प्रभाव बढ़ गया था तब तक वूरे छत्तीसगढ़ के 
सुदूरपार्वती में सर्वपारिण ब्राह्मण आकर बस गये थे।

ब्राह्मणों के यहां पर आकर बसने के बारे में एक कारण यह 
भी बताया जाता है कि रतनपुर के राजा को नृद्र यज्ञ के आयोजन में बड़ी संख्या में 
ब्राह्मणों की आवश्यकता और उन्होंने इसके लिये आज से तीन - चार सौ वर्ष पहले 
उत्तर सरयू के किनारे से 108 ब्राह्मण परिवार को आमंत्रित किया।

जब ब्राह्मण परिवार के रहने के लिये ही जीवन यापन के लिये 
रतनपुर के राजा ने अनेक गांवों को दान में दे दिया, उस समय ब्राह्मण का प्रमुख 
कार्य उपरोक्त ही था। एक तो 16 वीं सदी के मुगलों के अत्याचार से अतः उत्तर 
सरयू के ब्राह्मण को यह प्राणत बढ़ा ही शांत और सुरक्षित लगा, जिससे प्रभावित होकर 
उन्होंने यही बसने का निर्णय ले लिया।

उत्तरप्रदेश से जगन्नाथपुरी तीर्थदर्श के लिये आने वाले ब्राह्मणों
के लिये दर्शन कोशल कोई नया क्षेत्र नहीं था। सभी इस शांत क्षेत्र से भाली भावि 
परिचित थे।

सोलहवीं सदी में औरंगजेब के समय में उसके अत्याचार से 
हिन्दू नागरिक तो निरस्त करे ही उन्होंने मुसलमानों को भी अतः न रखा था, मुगल 
शासक औरंगजेब ने जनता के लिये अत्यधिक कर लगा रखा था। हिन्दूओं के लिये 
जल्दी कर भी था जिससे वे किसी भी प्रकार से न दे सकने के कारण वहां से 
पलायन कर जाना चाहते थे। अपनी ही मातृभूमि में रहने के लिये उन्हें कर देता 

1. शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ : पृष्ठ 59.
2. आबिद अभिनंदन ग्रंथ पृष्ठ 59
पढ़ता था। इस तरह से ब्राह्मणों के छत्तीसगढ़ आने के कई कारण थे।

नतिविविधयाः:

अत्याचार और असत्य के विरुद्ध आवाज उठाना प्राचीन काल से ही ब्राह्मणों का नैतिक उत्तरदायित्व रहा है। उनका प्रमुख कार्य परंपरागत गुरू -
शिल्प परंपरासूची संस्कृत वाङ्मय अध्ययन करना और दूसरा कार्य कर्मकाण्ड और
tsंस्करों की भावना का पुन: स्थापन करना था।

उस समय दक्षिण कौशल {छत्तीसगढ़} में मराठों का राज्य था,
उन्हें भी योग स्नेहों की आवश्यकता थी उन्होंने ही अपने राज्य में उन ब्राह्मणों

tो बेहार, नगरी, सताहकार और माल्यादि आदि के पदों में उनके बौद्धिक त्त्व के
अनुसार पद दे दिया।

"ब्राह्मणों की विशेषता उनकी जाति नहीं बल्कि उनका जान
किरित समाज के लिये त्याग बलिदान करने की क्षमता भास यही है।"

1. शुक्ल अभिनंदन स्वरः: पृष्ठ
2. विधा निवास मिश्र {प्रधान संपादक} नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

सर्वोपरि व प्रकाश, पेज नं.
3. वहीं... पेज नं.
कांग्रेस का जन्म और राष्ट्रीय चेतना का चौथीसंध में उदय :-

कांग्रेस का जन्म :-

19 वीं सदी के मध्य तक भारत में राष्ट्रीय चेतना पर्याप्त मात्र में व्यक्त हो चुकी थी। इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संगठनों के रूप में होने लगी थी। ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्व विरोध तथा असंतोष भावना ने उन्हें संगठित मोर्चे लेने का बाध्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन को संगठित करने के लिये अनेक राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भारतीयों की एक संपूर्ण देश की प्रतिनिधि राजनीतिक संगठन की स्थापना की इच्छा की पूर्ति थी।

यद्यपि देश के विभिन्न प्रान्तों और नगरों में अनेक राजनीतिक संगठनों की स्थापना की जा चुकी थी, फिर भी देश में एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन का आभाव खटक रहा था। 1877 के दिल्ली दरबार के अवसर पर "श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी" ने ऐसी संस्था की आवश्यकता का अनुभव किया। इस दिशा में छोस कदम उठाने में एक अवकाश प्राप्त अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने नेतृत्व प्रदान किया। उन्हें ही "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" का जनक कहा जाता है।

उद्देश्य :-

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में भिन्न - भिन्न मत है। कुछ विद्वान इसकी स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा बताते हैं। और कुछ इसे भारतीय राष्ट्रियता का माध्यम बताते हैं।

1. राजेन्द्र मोहन भटनागर :- भारतीय कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ 65.
2. सावरकर : 1857 का भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास पेज 10-25.
3. वीरकेश्वर प्रसाद :- भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन, पेज 76.
"A safety value for the escape of great and growing Forces was urgently needed and no more efficacious safety value then one congress movement could possibly device."

-- Sir William Wodehurn.

"कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य को खतरे से बचाना था। भारत की राजनैतिक स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न करना नहीं।"

-- लाला लाजपतराय. 2.

"उस समय भारत पर ऐसे आक्रमण का विषेषतः था जिसके निवारण के लिये भारतीय आंदोलन को ठीक दिशा में बल देना आवश्यक था।"

३० नन्दलाल चटर्जी.

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में सभापति उमेशचन्द्र बनर्जी ने कांग्रेस के निम्नलिखित उद्देश्य बताये हैं :-

1. देश हित के लिये काम करने वालों में पतिष्ठता और मिलता बढ़ाना।

2. राष्ट्रीय एकता की भावना का किस्तार करना।

3. महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्न पर समितियों संग्रह करना।

4. देश – हित के लिये साधनों और दिशाओं का निर्णय करना। 3.

जस्तूतः पहले इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य निरोधी तथा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करना नहीं था बले ही धीरे – धीरे इसका उद्देश्य राजनैतिक हो गया तथा इसका अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्त हो गया।

1. राजेन्द्र मोहन भटनागर : भारतीय कांग्रेस का इतिहास : पृष्ठ 77.

2. बीरकंधर प्रसाद – भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन पेज 77.

3. वहाँ :- पेज 78.
अट्टाल भारत की क्रांति का छत्रीसगढ़ पर प्रभाव :--

अंग्रेजी ने भारत पर पैर जमाने के साथ साथ अजस्र अन्याचार प्रारंभ किये जिससे छत्रीसगढ़ भी अछूता नहीं रहा। राजनीतिक अत्याचारों के साथ धार्मिक अत्याचार भी प्रारंभ हो गये, जैसा कि ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों के चेयरमैन मैन्फ्रीज ने 1857 में हाउस ऑफ़ काम्स में कहा था "इंग्लिश ने भारत का यह शान से पूर्ण राज्य इंग्लिश को इसलिए सीधा है ताकि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इसा मसीह की विजय ढंगा लहराने लगे।"

भारत के स्वर्णम इतिहास में 1857 की क्रांति एक युग बाधक घटना थी क्रांति के स्वरूप के संदर्भ में विद्रोहों ने अलग अलग राय दी है किन्तु आज यह संदर्भ स्वतंत्रता प्राप्ति का सुधार माना जाता है जो 1947 में फिलीप्पिन्स हुआ भारत के इतिहास में इसका महत्त्व एवं गौरव इसलिए भी माना जाता है कि विदेशी अधिपत्य और अत्याचारों के विरुद्ध भारतीयों द्वारा किया गया यह प्रथम संगठित प्रयास था।

1857 की इस क्रांति में अंग्रेजों ने एक नई रायफल अपनी सेना में प्रारंभ की जिसके कारूनों को दोतो से काटना पड़ता था और इन कारूनों में विकंग थे जाय और सूजन की चर्चा का उपयोग किया गया था। भारत में अंग्रेजी सेना में हिन्दू और मुसलमान दोनों थे और इस कार्य में दोनों के धर्म के विपरीत आचरण होता। इसके अलावा भी अन्य बहुत से कारण सेना में सिपाहियों में असंतोष फैला कर धर्म पर कुटरापात के रूप में अंग्रेजों ने अपनाये थे जैसे पमड़ी बोधना, मस्तक पर दुका लगाना, आदि प्रतिबंधित कर दिये थे।

1. हार्दिक - माधव राय संप्रे पृष्ठ 223.
2. आबिदः: माधव राय संप्रे
इस क्रांति में कार्यकर्ता की घटना ने स्क्रिप्ट कर दिया और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के उद्घोषक थे: मेरठ के सिपाही मंगल पांडे। यथापि उन्हें शंकित से इस विद्रोह का दंपत्ति कर दिया और मंगल पांडे की फांसी के देखरेख से विपक्ष शान्त हो जाएगा किन्तु शहादत चंद्र वर्ध्मण्डल नहीं जाती मंगल पांडेय की शहादत एवं उनके उद्घोष जंगल में आग की तरह देश के विभिन्न क्षेत्रों के सिपाहियों में फैल गया।

इस आंदोलन के बारे में सर विलियम हावर्ड रसेल ने "माई डायरी इन इफेडिया इन दी डायर 1858-59 में लिखा है कि एक ऐसा युद्ध था जिसमें जनता अपने धर्म के नाम पर और अपने राष्ट्र के नाम पर बदला लेने के लिये और अपनी आशाओं को पूर्ण करने के लिये उठी थी। इस युद्ध में सारे राष्ट्र ने अपने उपर से विदेशियों के जन्य को उत्तर पक्ष करके उसके विजय बनाने का निर्धारण ने लिया था।

"डॉ कार्टन भी मानते है कि यह विद्रोह केवल सिपाहियों द्वारा शुरू किया गया विपलव ही नहीं बल्कि एक जन साधारण विद्रोह था।

कुछ विद्रोह इसे मात्र सैनिक विद्रोह मानते है: लॉरेंस और सर जान सिले मानते है: कि 1857 की क्रांतिपूर्ण रूप से राष्ट्रीय तथा सैनिक विद्रोह था। जिसका न कोई देशी नेतृत्व था और न जनता का सहयोग।

पी.ई. राहट्स आदि विद्रोह भी इसी कथन को सत्य मानते है।

1. आर.सी. मुन्नुदार :– इयर्स और फ्रीडम मूवमेंट इंडिया. खण्ड – 1 पृष्ठ 302.
इन सबसे अलग सर ज़रूय अडटर्म इसे मुझे समाप्त बहादुर शाह के नेतृत्व में अंग्रेजी सल्तनत का उन्मूलन कर पुनः अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये किया जाने वाला भारतीय मुसलमानों का पड़यंत्र बताते है। किंतु विदान इससे सहमत नहीं है। क्योंकि इसमें ओसी की रानी तथा बाई, नाना साहब, कुंवर सिंह, अध्यक्ष के ताल्लुकेदारों आदि ने संज्ञान किया था। अतः इस क्रिति के संबंध में किसी कीशोष संप्रदाय या विशेष धर्म से नहीं था बल्कि यह हिंदुओं और मुसलमानों का अंग्रेजों के विरुद्ध एक संयुक्त संगठन था।

"प्रमुख देश भक्त वीर सावरकर कहते है कि यह चरम सत्य है कि एक छोटा सा मकान बिना मजबूत नींव के नहीं बनाया जा सकता।"

सावरकर ने दि इंडियन चार इंडिपेंडेंस में उपरुक्त एवं सही

उल्लेख किया है कि आंदोलन के इतिहास को लिखने वाले लेखक यदि 1857 के इस भारतीय सूत्रपति को नकारात्म है तथा आंदोलन के पीछे छिपी हुई दुष्क प्रतिज्ञा को अपने वर्ण में स्थान नहीं देते और यह मानते है कि आंदोलन का आधार वस्तु तिनके के ऊपर बढ़ा था तो ये या तो मूर्ख है या तो संभावना: इनको इसका ज्ञान नहीं है अतः निश्चित ही ये इतिहासकार बनने योग्य नहीं है।

इस आंदोलन की जड़ें बहुत भी गहरी थी प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी की सल्तनत बहुत तेजी से पैल रह थी प्रायः भारतीय रियासतों को या तो कंपनी की सल्तनत में मिला लिया गया था, या भारतीय शासक कठपुतली बना दिये थे। सतारा, नागपुर, ओसी एवं कई मराठा रियासतों समाप्त कर ली गई थी और पेशवा बाजीराव के बाद उनकी किसी सहायता बंद कर दी गई थी।

1. वही.ए. समित : - द अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, पृष्ठ - 22
कंपनी की आर्थिक नीतियों से भारत के छोटे उद्योग नष्ट कर दिये गये थे। उन्नतों सदी में यह असंतोष और भी बढ़ा जब अंग्रेजों ने भारतीयों की धार्मिक, सामाजिक नीति रिवाजों में हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया। यह भी सत्य है कि अंग्रेजों के कुछ सुधार भारतीय कुरैशियों को समाप्त करने और रहन सहन सुधारने में सहायक थे किंतु विदेशी शासन को भय और शंका से देखने के कारण और अधिकांशतः अत्याचारी नियमों के कारण कुछ न कुछ उन सुधारों को भी भारतीयों ने शंका से ही देखा। जैसे सती प्रथा समाप्ति के नियमों 1856 में विधानों के लिये पुनःविवाह का कानून यदापि सुधारक गूढ़ थे किंतु भारतीय जनता के मन में विदेशी शासन के प्रति एक अविश्वास की भावना पहर कर गई थी, अतः स्वामित्विक रूप से लोगों ने यह महसूस किया कि उनका धर्म और सामाजिक जीवन भी बहुत खतरे में हैं।

विदेशियों के निरंतर अत्याचारों का प्रतिफल थी 1857 की क्रांति। यह आय बेरकपुर, भेरत ही नहीं पूरे संयुक्त प्रान्त में पैली हुई थी। जांसी तक इसका विस्तार हो गया था सिपाही बिना किसी पूर्व योजना के मेदान में कूद पड़े किंतु भेरत में वे अधिक समय तक नहीं टिक सके यहीं से क्रांति की ज्वाला प्रारंभ हुई। बहुत से सिपाही भेरत से दिल्ली की ओर बेड़े तथा नावों से बने पुल द्वारा जमुना पार कर वे दिल्ली के नाम मात्र किंतु मान्य बादशाह अत्यस्वरूप अभू जाफर सिराजुद्दौला बहादुरशाह के समान ध्वनि और बादशाह से नेतृत्व की प्राप्ति की कुछ संस्कृत के बाद बादशाह ने स्थीरकृत दे दी एवं इस प्रकार इन विभव को वैधता मिल गई और इसकी मान्यता राजनैतिक हो गई और सिपाही अपने बादशाह के नाम पर युद्ध रहे गए।

बीर साबरकर :- द इंडियन वार आफ इंडिपेंडेंस, पृष्ठ 36
लाई बेडन ने उल्लेख करते हुए मध्यप्रदेश में स्वातंत्रता आदोलन के इतिहास में लिखा है रजनीगंगा के कारण और फ़ेरक सत्य है। धर्म में नये परिवर्तन करना, विशेषज्ञेयक्ष की समाजिक, व्यापक दमन, अर्थशास्त्र व्यक्तियों की उन्नति और जी अनेक कारण है जो विरोध करने वालों को समान रूप में संगठित कर देते है।

इस प्रकार सभी कारण अधूरी शासन में इकट्ठा हो गये थे यह इनसे उठने वाली भारतीय की हृदय की दीप घीरे – दुर उनके हृदय में क्रांति के पौधे को विकसित कर रही थी जिसके प्रस्तुत हुई।

महान स्वतंत्रता सेनानी सावरकर ने लिखा है और बहादुर जफर की घोषणा को बताया है कि हिन्दूस्तान के पुनः हम अपना सत्तित्व दूढ़ कर ले तो दुम्मों को अल्प समय में ही नष्ट कर सकते है और जीवन में से बहुमूल्य अपने धर्म और देश को विदेशियों के काले कारणों से मुक्त कर लेंगे।

समार बहादुर शाह जफर ने घोषणा की कि हिन्दू और मुस्लिम दोनों एक जूट होकर इस युद्ध में भाग लेंगे।

किन्तु भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अन्दरुल कलाम आजाद सावरकर के अन्तिम रात्रि उनके नामक और 1857 से संबंधित विभिन्न अन्तिमके अध्ययन के बाद एक रुप ईस तरह नये रूप निकले है। इसमें कोई शक कि स्वतंत्रता संग्राम के रो में सेनानी विदेशियों विदेशियों की भावना से ओत्सर्ख हो रही एवं उस्तेजित थे। किन्तु उनकी यह भावना ही विदेश उत्पन्न के लिए पर्याप्त नही थी।

दिल्ली समार बहादुर शाह जफर का कवयन :-

"हमारे दीर्घों के अंतः करण में जब तक आत्मविश्वास और देश भक्ति की भावना विद्यमान है तब यह हिन्दूस्तान की पावन कूपाण लंडन तक भी बाप करती रहेगी।"

"गजियों में बू रहेगी, जब तलक इमान की।
तब तबलिन तक चलेगी, तेह हिन्दूस्तान की।"

1. सावरकर साहित्य : 1857 का भारतीय स्वतंत्रता समर, पृष्ठ 485
इतिहास में 1857 का विद्रोह भारत में अंग्रेज सत्ता के लिये बहुत बड़े स्तर पर एक बड़ी चुनौती के रूप में माना जायेगा। जिस प्रकार के राष्ट्रीय आंदोलन की भावना से जनता अभिभूत हुई, स्वतंत्रता सेनानियों के दिलों में उससे जो उदय साहस पैदा हुआ तथा जिससे एक कठिन युद्ध की इतिहास चक घटना घटी, और जिससे नैतिक मूल्यों का अहसास लोगों को हुआ उसका मूल्यांकन ही नहीं किया जा सकता।

हम ऐसा मान सकते हैं कि चूकिए एक सामान्य संघर्ष का वातावरण समूह देश में व्याप्त था इसलिये यह विद्रोह कई स्थानों पर स्वयं ही प्रारंभ हो गया। यह पूर्व नियोजित नहीं था।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन की पूर्वभूमि :-

इस 1857 के महान विप्लव के साथ साथ छत्तीसगढ़ में भी क्रांति की आग भड़क उठी, जनवर्या एवं अफवाहों की आंधी चारों ओर फैलने लगी। छत्तीसगढ़ अंचल भी देश के पायल सम्म हेतु जागृत हो उठा। उस समय राष्ट्रीय थल सेना की तीसरी टुकड़ी का मुख्यालय रायपुर में ही था और उसका शेष भाग बिलासपुर में अरपा नदी के किनारे बसा हुआ था। मई 1857 में मेरठ में घटित घटना का पता ग्रहणप्राप्त के लोगों को भी चला। परिणामः सेना की टुकड़ों में एक असंतोष की भावना उसी समय पनप उठी। इस प्रकार शताब्दियों से अलग - अलग यह क्षेत्र भी क्रांति रूपी ज्वाला से ध्वंक उठा।

अशोक शुकल :- छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास तथा राष्ट्रीय आंदोलन,
पृष्ठ 45.
देश व्यापी इस आशाति की प्रतिक्रिया छत्तीसगढ़ में भी विस्तारित रही। सात सितम्बर 1857 तक यह आशाति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई इसका प्रमाण है कि अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में इसे महसूस किया और रायपुर के अंग्रेज हिन्द कमिश्नर ने अपने मुख्यालय नागपुर के कमिश्नर को कृति कि इस क्षेत्र में संभावना को रोकने के लिये अतिरिक्त सैन्य बल भेजने का आदेश किया और इसीलिये नागपुर के कमिश्नर ने मुद्रास के अपने अंग्रेज अधिकारियों को तार से सूचना भेजकर बहादुरपुर से सेना की पांच टुकड़ियाँ को तत्काल रायपुर प्रस्थान करने का आदेश भेजा, ताकि आपस्यकलातुमार यह सेना यहाँ पर पहुँच सके।

छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र कृति के लिये उपयुक्त भी था और यदि समूची कृति को सुसंगठित और सुव्यवस्थित करना का प्रयास किया गया होता तो कृति की जो ज्ञाला यहाँ इस अर्धसे मृत्युविवर्तित होती है वह पूरे पश्चिमी मध्यप्रदेश, भंडारा, चांदा से लेकर पूर्व में उड़ीसा और पूर्वी बंगाल को जलाकर खाक कर देती।

नागपुर के कमिश्नर ने 27 जनवरी 1858 को अपने एक पत्र में मेजर व्हाइट लाक को लिखा भी है : "रायपुर जिले में यदि कृति भड़क उठी होती तो तत्क्षण क्षेत्रों के जमींदारों में भी इसके अंतर्गत देश के पूर्वी और उत्तरी भाग तथा भंडारा, चांदा की जमींदारी भी आती है तथा इस प्राण के पश्चिमी भाग को यह प्रभावित करती है। यदि हम यह कृति इतने व्यापक पैमाने पर इतने कठिन और विकारालग्रूप में विकसित होती तो बिना एक विशाल सेना की आहूति के इस पर नियंत्रण करना असंभव हो जाता।

1. अशोक शुक्ल :- छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास व राष्ट्रीय आंदोलन.

पृष्ठ 46.

2. आभिजत :-
अंग्रेज अधिकारियों का यहां के लिये ऐसा सोचना असल्य नहीं था। पंद्रह अक्टूबर अट्ठारह सौ संतावन को गुरुर सिंह, रणमंत सिंह और संकल्पुर के कुछ अन्य जनजीवियों के नेतृत्व में एक विशाल संख्या में विद्रोही एकत्रित हुये तथा उल्लत की और सोहागपुर के कुछ अन्य तालुकों में प्रविष्ट हुये, किन्तु तत्काल बाद ही रायपुर के डिप्टी कमिश्चर ने अपने स्थानीय सेना के साथ सोहागपुर के पास इन विद्रोहियों पर आक्रमण पर आक्रमण कर दिया तथा जो संध्याप्रारंभ हुआ उसमें अंग्रेजी सेना के कुछ अध्यायों तथा गोड़े हताहत हुये। यथापि अंग्रेजों को सम्र विद्रोहियों को बंदी बनाने में सफलता मिली। किन्तु शीघ्र ही वे अंग्रेजों के चमुल देख निकल कर भाग गये। इन विद्रोहियों का नेता सतारा के भूतपूर्व वकाल रंगा बापूजी था। और सोहागपुर में इन विद्रोहियों की स्थिति मजबूत थी और उन्होंने रायपुर के जमीदारों को भी अपने झंडे के नीचे एकत्रित होने का आदेश किया था। 1.

1. प्रयाण दत्त शुक्ल :- क्रांति के चरण पृष्ठ 312.
A people who have become Politically organised.

-- Rose 1.

A giant of the Forest with millenia behind it.

-- Shrimati Anibecant. 2.

The nationalist movement of the Latter period was an enlightened Political movement.

-- Dr. Raghuvanchi. 3.

1857 के स्वतंत्रता के महासमर के समय ही छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण प्रारंभ हो चुका था। सन् 1857 ई. का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र का भी इस महासमर में विशेष स्थान था। जहां एक ओर छत्तीसगढ़ के जमींदारों ने अंग्रेजों की सत्ता को चुनौती दी थी और दूसरी ओर तीसरी फैलद तैनातियों के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था। और 1857 में जब भारत में राष्ट्रीय जागरण परिवर्तित हुआ उसी काल में छत्तीसगढ़ में भी राष्ट्रीय भावना दृष्टिगोचर हुई। छत्तीसगढ़ में 1857 ई. के स्वतंत्रता के महासंग्राम की भूमिका निभाता समझा जाता है। 4.

1. सोनखाने के जमींदार नारायण सिंह का विद्रोह.
2. रायपुर में संध्याकाल.
3. संबल पुर के सुरेन्द्र साह का विद्रोह.
4. रायपुर में सैन्य विद्रोह.
5. उदयपुर का विद्रोह.

1. जे.पी.शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन : पृ. 43.
2. दीर्घकाश: प्रसाद : भारत का संवेदनात्मक एवं राष्ट्रीय आंदोलन पृ. 72.
3. वहीं 
4. संदर्भ छत्तीसगढ़ पृ. 24
सोनाखान के जमींदार नारायण सिंह का विवरण :–

रायपुर निले के बलौदा बाजार तहसील में स्थित सोना खान कल्पुरियों के समय एक जमींदार थी। गराटों के काल में भी यह महत्वपूर्ण जमींदारी बनी रही, 1818 ई. में ब्रिटिश सांस्कृति के काल में यहां के जमींदार ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया था। तात्कालिक अंग्रेज अधिकारी केन्टन मेक्सन ने 1819 ई. में सोनाखान पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया। रामायण को विकास में संधि करनी पड़ी। अंग्रेजों ने सोनाखान के जमींदार के अनेकों गांव जन्ता कर लिये। किन्तु स्वतंत्रता की भावना रामायण के वंश में चली गई। लगभग 1930 के आसपास रामायण की मृत्यु हो गई और नारायण सिंह सोनाखान के जमींदार नियुक्त हुए। अप्रैल 1856 ई. में सोनाखान जमींदारी में भूषण अकाल पड़ा। कस्टोल्ड के एक साहुकार ने काफी मात्रा में अन्य एक्टिव कर रखा था। नारायण सिंह ने उक्त साहुकार का अनाज अपनी भूमि फूजा में बतवा दिया तथा इस बात की सूचना अंग्रेज अधिकारियों को भी दे दी। कस्टोल्ड के साहुकार ने भी यह बात की शिकायत अंग्रेजों से की, जिससे अंग्रेज अधिकारियों को मौका मिल गया, 24 अक्टूबर 1856 को नारायण सिंह को लूटपाट और डॉक्टर के आरोप में गिरफ्तार कर रायपुर के जेल में डाल दिया गया। 1.

इस बीच देश में मई 1857 ई. को देश में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता का महासंग्राम प्रारंभ हुआ। तब रायपुर स्थित सेना, जनता के सहयोग से स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गई। 2.

1. संदर्भ छत्तीसगढ़ :
2. वीर सावरकर : द इंडियन वाय आफ द इंडिपेंडेंस.
अगस्त 1857 में तीसरी देशी पैदल सेना के सहयोग से नारायण सिंह जेल से भाग निकलने में सफल हुये और सोनाखान पहुँचे। नारायण सिंह ने संदर्भ के लिये 500 सैनिकों की एक फौज इकट्ठा की और सोनाखान के निकट एक पहाड़ी को अपना केन्द्र बनाया। नारायण सिंह को पुरा सम्फल करने के लिये लेफ्टिनेंट सिस्टर नवम्बर 1857 ई. को सोनाखान रवाना हुये। प्रारंभ में समय को पराजित होना पड़ा किन्तु अतिरिक्त सेना आ जाने से तथा भट्टाँच, सिलाईघड़ व देवरी के जमींदारों से मदद मिलने के कारण वह नारायण सिंह को पराजित करने में सफल हुये। तत्कालीक हिंदी कमिशनर इलियट ने राजनीत का आरोप लगाकर नारायण सिंह को 9 दिसम्बर 1857 को फांसी की सजा सुना दी "इस प्रकार नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद हुये।" 1.

रायपुर में संदर्भ :-

रायपुर गजेटियर से जानकारी मिलती है कि 15 अक्टूबर 1857 को गुलर सिंह, रणमन्त्र सिंह तथा संबलपुर के कुछ जमींदारों के साथ तत्कालीक रायपुर जिले के उत्तर में झोहापुर क्षेत्र में प्रवेश किया। रायपुर के हिंदी कमिशनर ने रायपुर के स्थानीय सैनिकों के साथ तत्कालीन रायपुर जिले के उत्तर में झोहापुर क्षेत्र में प्रवेश किया। रायपुर के हिंदी कमिशनर ने स्थानीय सैनिकों के साथ झोहापुर के पास आक्रमण किया, इस संदर्भ में ब्रिटिश सेना के कुछ घुड़सवार मारे गये। बांट में 17 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया गया किन्तु वे फ्रेड से भाग गये। इस संदर्भ में विद्रोहियों के वास्तविक नेता ये "सतारा के राजा के भूतपूर्व वकील रंगा बाघू" 2.

1. जे. पी. शर्मा : मध्यप्रदेश का राजस्थान आंदोलन पृष्ठ - 25.
2. रायपुर गजेटियर :
संबलपुर के सुरेन्द्र साय का विवरण :-

सन् 1827 में संबलपुर के राजा चौहान राजा महाराजसाय की मृत्यु बिना उत्तराधिकारी के हो गई। चौहान वंश की परंपरा के अनुसार संबलपुर की राजा जदुरी पर उनकी राजापूर सिंहा शाखा के सुरेन्द्र साय का अधिकार का अस्तीत्व बन गया। पहले महाराजा साय की विधवा रानी मोहनकुमारी को गद्दी पर बैठा दिया था। फिर उन्होंने अपने अंग्रेज़ साथी के साथ राजापूर के प्रेमी दरबार विवाह के अनुसार विवरण सिंह को अनबंध रूप से राजनीति का विषय का अनुभव कराया। राजपूर सिंह के चौहान वंश के श्रेष्ठ विवाह परिवार से छोड़ा गया था। सुरेन्द्र साय के छ: भाईयों, उनके चाचा बलराम सिंह तथा अनेक जमींदारों ने विवाह प्रारंभित किया। इसी बीच सुरेन्द्र साय के समर्थक दल ने जमींदारी के बलराम देव की राज्य सिंह के एक सिपाही ने हत्या कर दी। इसके बाद बलराम सिंह ने सुरेन्द्र साय के किले पर आक्रमण कर दिया था। वहां के जमींदारी दुर्जन सिंह की जो संबलपुर के राजा का विवाह था, हत्या कर दी। इस अपराध में सुरेन्द्रसाय, उनके भाई उदनसाय और चाचा बलराम सिंह को आजीवन कारावास की सजा देकर हजारी बाग जेल में भेज दिया गया।

इसी बीच अंग्रेज़ के अधिकार से असंतुष्ट जमींदारों एवं दलियों ने सुरेन्द्र साय के नेतृत्व में संघर्ष करने का निश्चय किया। अंततः 31 अक्टूबर 1857 को सुरेन्द्र साय ने राजा के किले पर आक्रमण कर दिया था। वहां के जमींदारी दुर्जन सिंह की जो संबलपुर के राजा का विवाह था, हत्या कर दी। इस अपराध में सुरेन्द्रसाय, उनके भाई उदनसाय और चाचा बलराम सिंह को आजीवन कारावास की सजा देकर हजारी बाग जेल में भेज दिया गया।

संबलपुर का जो उस समय छत्तीसगढ़ का हिस्सा था। आज भी सुरेन्द्रसाय के किसी भी क्षेत्र में एक संघर्ष की यात्रा में संघर्ष करने का निश्चय किया। अंततः 31 अक्टूबर 1857 को सुरेन्द्र साय ने राजा के किले पर आक्रमण कर दिया था। वहां के जमींदारी दुर्जन सिंह की जो संबलपुर के राजा का विवाह था, हत्या कर दी। इस अपराध में सुरेन्द्रसाय, उनके भाई उदनसाय और चाचा बलराम सिंह को आजीवन कारावास की सजा देकर हजारी बाग जेल में भेज दिया गया।

1. डॉ. पी. मिश्र : हिन्दी आफ़ प्रीडम मूल्य मेंट इन एम.पी. पेज 96
2. संदर्भ छत्तीसगढ़ : पृष्ठ 24
कम्बलोल ने यह कहकर निर्द्देश कर दिया कि सुरेन्द्र साह के विरुद्ध आरोप सिद्ध नहीं होते फिर भी ब्रिटिश अधिकारियों ने 1818 के तीसरे रेगुलेशन के तहत इन्हें केड कर लिया, और असीरगढ़ भेज दिया। जहां 28 फरवरी 1884 के लगभग 90 वर्ष की आयु में सुरेन्द्र साह की मृत्यु हो गई। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का एक सितारा टूट गया।

रायपुर में सेना विद्रोह :-

नारायण सिंह को पांडी देने की घटना से छत्तीसगढ़ में असंतोष व्याप्त हो गया था। रायपुर में स्थित तीसरी नेटिव सेना स्वतंत्रता के महायज्ञ से अधूरी नहीं रह सकी। 18 जनवरी 1858 की रात के 8 बजे मैगनीज लशकर हनुमान सिंह ने अपने दो साथियों के साथ सार्ट सिडवेल पर तलवार से आक्रमण किया। नजारे बाद में गृहर हो गई। इसके बाद वे इस विद्रोह में समर्पित होने का आश्वासन करते हुए अपनी सेना में आ गये। संगठन तथा योजना के आधार के कारण छः घंटे में यह विद्रोह दबा दिया गया। लशकर हनुमान सिंह फरार हो गये तथा अंग्रेज उसे कभी भी गिरफ्तार न कर सके।

किन्तु तीसरी सेना के 17 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया और रायपुर के हिंदी कमिशनर इलियट के आदेश पर सेना और नागरिक के समक्ष इन सभी को पांडी पर लटका दिया गया। इस विद्रोह में प्राणों की आह्लादी देने वाले सेनानी थे:

1. जे.पी. शर्मा : मध्यप्रदेश का राज्यवर्ष आंदोलन 1920-1947 पृष्ठ 122
2. डी.पी. मिश्रा : मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास.

पृष्ठ - 119.
गाजी खाँ, अब्दुल दय, मुल्लू, शिवनारायण, पन्ना लाल, मातादीन, ठाकुर सिंह, अकबर हुसैन, बल्ल दुबे, लल्लसिंह, बुद्रू, परमांड, शोभाराम, दूरू प्रसाद, नजर मुहम्मद, शिव गोविन्द एवं देवदीन।

उदयपुर का विद्रोह :–

सरगुजा राज परिवार की एक शाखा उदयपुर में राज्य कर रही थी। यहां 1818 में ब्रिटिश संरक्षण काल में कल्याण सिंह राजा थे। 1852 में यहां के राजा और उनके भाईयों पर मानव हत्या का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने कैद कर लिया, तथा रियासत को अपने अधिकार में ले लिया। सन् 1857 के विद्रोह के समय उदयपुर के राजा अपने दोनों भाईयों के साथ उदयपुर पहुंचे। 1858 में इन्होंने सैनिक संगठन के साथ विद्रोह किया और कुछ समय के लिये अपना राज्य स्थापित कर लिया, किन्तु सरगुजा राजा की सहायता से इनके राजकुमार भाईयों को 1859 में गिरफ्तार कर आजम काले पानी का दण्ड देकर अप्पमान भेज दिया गया। उदयपुर की रियासत सरगुजा महाराज के भाई किन्द्रेवरी प्रसाद सिंह देव का विद्रोह दबाने के योगदान देने के उपलब्ध में 1960 में अंग्रेजों ने दे दी।

इस पुकार छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्वतंत्रता के इस प्रथम महासमर को दबाने में अंग्रेज सफल हुये। इस महासमर में कई राजाओं, जमीदारों, सैनिकों तथा नागरिकों ने भाग लिया किन्तु अन्य राजाओं और जमीदारों की मदद से इसे दबा दिया गया। संभवतः ये लोग ही भारत की गुलामों के कारण बने परतन्त नागरिकों में राष्ट्रीय जागरण पूर्णतः किस्तू छो चला था। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जागरण का काल प्रारंभ हो चुका था।

1. संदर्भ छत्तीसगढ़ : पृष्ठ 28.
2. Abid.
छत्तीसगढ़ की रियासतों में असंतोष :-

तत्कालिन छत्तीसगढ़ में 14 रियासतें थीं। ये सभी रियासतें प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष अंबुंध से मुक्त थीं। किन्तु इस नियम के बन जाने से किसी राजा की मूल्य के बाद उत्तराधिकारी राजा राजनय की स्वीकृति ब्रिटिश शासन के द्वारा प्राप्त करता है सामान्यतः कुछ स्थितियों में ब्रिटिश शासन राज्य के आंतरिक मानलों में हस्तक्षेप कर सकता था। ऐसे कुछ रियासतें जिस पर ब्रिटिश शासकों का हस्तक्षेप था वे निम्न थे। 1.

राजगढ रियासत 1862 में राजा देवाव के पुत्र घनश्याम सिंह इस रियासत के उत्तराधिकारी बनाये गये परन्तु शासन व्यवस्था में अनियमितता का आरोप लगाकर ब्रिटिश शासक ने एक अधीक्षक की नियुक्ति की जो भूपदेव सिंह के राजा बनने तक 1894 तक चलता रहा।

सांगण्ड के राजा संगाम सिंह सन 1830 से 1872 तक निःशक्त शासन करते हुए ब्रिटिश शासन से सम्मानित होते रहे, परंतु 1872 में उनकी मृत्यु हो गई तब नाबालिग प्रताप सिंह रियासत के उत्तराधिकारी हुए शीघ्र ही शासन में दक्षता का आभाव दिखाकर ब्रिटिश अधिकारियों ने हस्तक्षेप की नीति अपनाते हुये शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। 2.

भिक्नी रियासत की स्थिति भिन्न थी। यहां के राजा रणजीत सिंह के अलवी या जनता खिन्न थी और इसे ही महत्वपूर्ण कारण मानकर ब्रिटिश शासन ने तत्कालिन राजा के अपने कर दिया और सन 1857 से 1892 तक शासन कार्य ब्रिटिश शासन के ही माध्यम से चलने लगा। इस प्रकार छह खंड खिन्न की भी स्थिति थी यहां भी ब्रिटिश सरकार ने एक दीवान की नियुक्ति की थी।

बस्तर की रियासत के जनता की राजा से अलवी या परेशान थे।

यूरोप में भी अधीक्षक की नियुक्ति 1873 से ही की गई जो सन 1883 तक चलता रहा। इस प्रकार स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ की देशी रियासतें शासन द्वारा शासित थीं।

1. डो जे.पी. शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन, पृष्ठ - 224.

2. Abid.